Resource: अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

License Information

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

JER

यिर्मयाह 1:1–19, यिर्मयाह 2:1–12:17, यिर्मयाह 13:1–24:10, यिर्मयाह 25:1–38, यिर्मयाह 26:1–29:32, यिर्मयाह 30:1–33:26, यिर्मयाह 34:1–45:5, यिर्मयाह 46:1–49:39, यिर्मयाह 50:1–51:64, यिर्मयाह 52:1–34

यिर्मयाह 1:1–19

परमेश्वर द्वारा नबी बनने के लिए यिर्मयाह को अलग किया गया था। यिर्मयाह को नहीं लगा कि वह यह कार्य कर सकता है जो परमेश्वर ने उसे सौंपा था।

उसके संदेह भी वैसे ही थे जैसे सैकड़ों साल पहले मूसा के थे (निर्गमन अध्याय 3 से 4)। परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह मिस्र के राजा से बात करें। मूसा ने परमेश्वर से कहा कि वह अच्छी तरह से बोल नहीं सकता।

परमेश्वर ने यिर्मयाह से राष्ट्रों और राज्यों से बात करने के लिए कहा। उन्हें राजाओं, अधिकारियों, याजकों और दक्षिणी राज्य के लोगों से बात करनी थी। यिर्मयाह ने परमेश्वर से कहा कि उन्हें बोलना नहीं आता।

यह परमेश्वर के लिए कोई समस्या नहीं थी। परमेश्वर ने यिर्मयाह को कहने के लिए शब्द दिए। परमेश्वर ने यिर्मयाह को चेतावनी दी थी कि जिन लोगों से वह यह कहेगा, वे लोग ही उसके खिलाफ लड़ेंगे। इसका मतलब है कि वे लोग नहीं सुनेंगे और यिर्मयाह को बोलने से रोकने की कोशिश करेंगे।

उबलते पानी के बर्तन के दर्शन ने परमेश्वर का मुख्य संदेश स्पष्ट किया। यह दक्षिणी राज्य के खिलाफ न्याय का संदेश था। यह उन न्याय संदेशों का एक उदाहरण था जिन्हें यिर्मयाह कई वर्षों तक साझा करेगा। परमेश्वर नहीं चाहता था कि यिर्मयाह उन लोगों से डरे जिनसे वह बात करेगा। परमेश्वर ने यिर्मयाह के साथ रहने और उसे बचाने का वादा किया था।

यिर्मयाह 2:1–12:17

यिर्मयाह के न्याय संदेशों ने समझाया कि परमेश्वर की प्रजा का न्याय कैसे और क्यों किया जाएगा। ये संदेश वैसे ही थे जैसे यशायाह ने न्याय के विषय में सन्देश प्रचार किए थे।

यिर्मयाह के लिए नबी का कार्य करना बहुत कठिन था। वह गहरे दुःख और पीड़ा के साथ रोया और कष्ट सहन किया। अपने शरीर के भीतर उसने परमेश्वर के क्रोध को जलती हुई आग की तरह महसूस किया। दक्षिणी राज्य के लोग और अगुवे सीनै पर्वत की वाचा के प्रति विश्वासयोग्य नहीं थे। उन्होंने दस आज्ञाओं का पालन नहीं किया। उन्होंने दूसरों के साथ वैसा व्यवहार नहीं किया जैसा परमेश्वर ने उन्हें मूसा की व्यवस्था में सिखाया था। उन्होंने ज़रूरतमंद लोगों के साथ बुरा व्यवहार किया। उन्होंने झूठे देवताओं की आराधना की, बजाय केवल परमेश्वर की आराधना करने के। उन्हें इस पर कोई लज्जा नहीं थी। वे उम्मीद करते थे कि परमेश्वर उन्हें आशीष देते रहेंगे। इससे यह प्रकट हुआ कि वे न केवल झूठ बोलते थे बल्कि झूठा जीवन जीते थे। इससे यह भी प्रकट हुआ कि उनमें कोई समझ या बुद्धि नहीं थी।

उन्होंने उत्तरी राज्य के उदाहरण से नहीं सीखा। उन्होंने उन समयों से नहीं सीखा जब परमेश्वर उनके खिलाफ न्याय लाया। सारस और अन्य पक्षियों के पास परमेश्वर की प्रजा से अधिक बुद्धि थी। परमेश्वर की प्रजा ने उसकी अपने पूरे हृदय से सेवा नहीं की। परमेश्वर ने इसे उनके हृदय में खतना न होने के रूप में वर्णित किया। उनके शरीर का खतना हुआ था। इसलिए उनके शरीर के बाहर परमेश्वर की वाचा का चिन्ह था। उनके द्वारा किए गए चुनावों ने दिखाया कि वे परमेश्वर का सम्मान और आदर नहीं करते थे। यह दक्षिणी राज्य के लोगों और अगुवों दोनों के लिए सत्य था। राजा, याजक और नबी परमेश्वर के शासकों के उदाहरण का पालन नहीं करते थे। वे परमेश्वर के नियमों को नहीं जानते थे और लोगों को परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने में अगुवाई नहीं करते थे। वे झूठ बोलते थे कि सब कुछ ठीक चल रहा है और राष्ट्र में शांति है। इसके परिणामस्वरूप, परमेश्वर अब वाचा के शाप को आने से नहीं रोकेंगे।

परमेश्वर अपने लोगों को क्षमा करना चाहते थे। वह चाहता था कि लोग अपने पाप से मुड़ें, पश्चाताप करें और उसका अनुसरण करें, लेकिन उन्होंने इसका इनकार कर दिया। इसलिए परमेश्वर ने यिर्मयाह से कहा कि वह यह प्रार्थना करना बंद कर दें कि परमेश्वर उन पर दया करें। परमेश्वर बाबुल की सेना का उपयोग अपने उपकरण के रूप में दक्षिणी राज्य का न्याय करने के लिए करेंगे। मंदिर नष्ट हो जाएगा। लोगों को उस भूमि से बाहर निकाल दिया जाएगा जो परमेश्वर ने उन्हें दी थी। परमेश्वर ने सुलैमान को इस न्याय के बारे में चेतावनी दी थी (1 राजाओं 9:6–9)। फिर भी परमेश्वर ने वादा किया कि वे अपने लोगों को पूरी तरह से नष्ट नहीं

करेंगे। वे हमेशा कुछ को जीवित रहने देंगे। इस प्रकार परमेश्वर दाऊद के साथ अपनी वाचा के प्रति विश्वासयोग्य बने रहेंगे।

परमेश्वर ने यिर्मयाह को भविष्य में एक समय के बारे में आशा के संदेश भी दिए। परमेश्वर अपने लोगों के साथ रहेंगे और विश्व पर यरूशलेम से राजा के रूप में शासन करेंगे। उत्तरी और दक्षिणी राज्य अपनी भूमि में फिर से एक राज्य के रूप में साथ रहेंगे। परमेश्वर सभी जातियों को उनके अपने देशों में वापस लाएंगे। यहूदी अन्य जातियों को सिखाएंगे कि परमेश्वर ही प्रभु है जो सब पर शासन करते है। हर जाति को उन विधियों का पालन करने के लिए आमंत्रित किया जाएगा जो परमेश्वर ने अपने लोगों को सिखाई थीं। हर वह जनसमूह जो परमेश्वर का सम्मान करता है, परमेश्वर के लोगों का हिस्सा बन जाएगा।

यिर्मयाह 13:1–24:10

यिर्मयाह ने बार-बार कई तरीकों से परमेश्वर के न्याय के विषय में संदेश प्रचार किए। कुछ सन्देश उसने भविष्यवाणी के कार्य के द्वारा बाँटें। यह सन का कमरबंद और कुम्हार के मिट्टी के बर्तन के साथ था। यह इस बात का भी संकेत था कि यिर्मयाह को विवाह नहीं करना था या उसकी कोई संतान नहीं होगी।

अन्य संदेश जो यिर्मयाह द्वारा दिए गए वे कविताओं के रूप में थे या बस किसी से बात करते समय बोले गए। ऐसा ही हुआ जब उसने पशहूर और सिदकिय्याह द्वारा भेजे गए अधिकारियों से बात की। परमेश्वर ने अपने लोगों की तुलना अपने संदेशों में अलग-अलग चीज़ों से की। इससे उसके लोगों को यह समझने में मदद मिली कि परमेश्वर क्या कहना चाहता था। परमेश्वर उनकी तुलना मशकों से, कुम्हार द्वारा आकार दी जा रही मिट्टी से और अंजीरों की टोकरियों से की। उसने उनकी तुलना एक वेश्या से और एक पत्नी से की जो अपने पति के प्रति विश्वासयोग्य नहीं थी। उस चित्र में, परमेश्वर पति के रूप में थे जबकि दक्षिणी राज्य के लोग और अगुवे पत्नी के रूप में। झूठे देवताओं की पूजा करना परमेश्वर के प्रति विश्वासघात था।

परमेश्वर ने अगुवों की तुलना चरवाहों से की। उस चित्र में, लोग परमेश्वर की भेड़ें थी। राजा, याजक और नबी वे चरवाहे थे जिन्होंने उन्हें नष्ट और तितर-बितर किया। कभी-कभी परमेश्वर अपने संदेश को एक संकेत के साथ भेजते थे। ऐसा ही हुआ जब परमेश्वर ने कुछ समय के लिए वर्षा नहीं होने दी। झूठे नबी ऐसे संदेश का प्रचार करते थे जो परमेश्वर की ओर से नहीं थे। उनके संदेश शांति और अच्छे समय के बारे में झूठ थे। इससे परमेश्वर बहुत क्रोधित हुए।

यिर्मयाह ने परमेश्वर के संदेशों को निष्ठापूर्वक प्रचार किया। परमेश्वर ने यिर्मयाह को चेतावनी दी थी कि लोग और अगुवे उसके खिलाफ लड़ेंगे। यह कई बार हुआ। लोगों ने यिर्मयाह की बात सुनने से इनकार कर दिया और उसका मजाक उड़ाया। उन्होंने उसके खिलाफ बुरी योजनाएँ बनाईं, उसे मारा और जेल में डाल दिया। परमेश्वर ने यिर्मयाह के साथ रहने का वादा किया था। परमेश्वर ने वादा किया था कि वह उसे उन लोगों से बचाएगा जो उसके साथ बुरा व्यवहार करते थे, लेकिन यिर्मयाह भयंकर कष्ट झेल रहा था। उसे लगा कि परमेश्वर ने उसे धोखा दिया है जबकि परमेश्वर ने उसके साथ रहने का वादा किया था। फिर भी यिर्मयाह अपने कष्टों के बीच परमेश्वर के प्रति निष्ठावान बन रहा। इस तरह वह अय्यूब के समान था।

यिर्मयाह ने जब प्रार्थना की, तो वह परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य था। उसकी प्रार्थनाएँ भजन संहिता की कविताओं और गीतों की तरह थीं। इनमें सहायता के लिए पुकार और शिकायतें शामिल थीं। यिर्मयाह ने परमेश्वर की स्तुति भी की और बताया कि वह कैसे परमेश्वर पर भरोसा करता था। अध्याय 23 में एक आशा का सन्देश था जो दाऊद के वंश से आने वाले एक राजा के बारे में था। वह दक्षिणी राज्य के लालची राजाओं की तरह नहीं होगा। वह व्यवस्थाविवरण 17:14–20 में दर्ज राजाओं के लिए परमेश्वर के नियमों का पालन करेगा। इस राजा को एक ईश्वरीय शाखा कहा गया था। यशायाह ने भी इस शाखा के बारे में भविष्यवाणी की थी (यशायाह 11:1–3)।

यहूदी लोग भी इस आशा के संदेश को मसीहा के बारे में एक भविष्यवाणी के रूप में समझने लगे। नए नियम के लेखकों ने इसे यीशु के बारे में भविष्यवाणी के रूप में समझा। यीशु वह शाखा है जो लोगों को परमेश्वर के साथ सही बनाती है।

यिर्मयाह 25:1–38

यिर्मयाह ने समझाया कि बाबुल कई राष्ट्रों पर शासन करेगा। उन्होंने यह यहोयाकीम के दक्षिणी राज्य के राजा के रूप में चौथे वर्ष के दौरान समझाया। यह वर्ष 605 ईसा पूर्व था।

राष्ट्रों को बाबुल की सेवा 70 वर्षों तक करनी होगी। इस न्याय संदेश को एक संकेत के माध्यम से समझाया गया था। संकेत एक प्याला था। प्याले के अंदर की दाखमधु को परमेश्वर के क्रोध के रूप में वर्णित किया गया था।

दक्षिणी राज्य के अधिकारीयों को प्याले से पीना था। दक्षिणी राज्य के आसपास के राष्ट्रों के अधिकारीयों को भी पीना था। वे पीने से मना नहीं कर सकते थे। यह आवश्यक था। इससे यह दिखाया गया कि परमेश्वर उनके खिलाफ न्याय लाने वाले थे।

यिर्मयाह के संदेश जो अध्याय 46 से 51 में पाए जाते हैं, उन राष्ट्रों के खिलाफ होने वाले न्याय को समझाते हैं। परमेश्वर न्याय लाने के लिए नबूकदनेस्सर को अपने उपकरण के रूप में उपयोग करेंगे।

यिर्मयाह 26:1–29:32

जब यहोयाकीम राजा थे, तब याजकों, भविष्यवक्ताओं और अधिकारियों के एक समूह ने यिर्मयाह को मार ही डाला था। जब सिदकिय्याह राजा थे, तब हनन्याह ने यह साबित करने की कोशिश की कि यिर्मयाह झूठ बोल रहा था। हनन्याह एक झूठा भविष्यवक्ता था। उसने एक संदेश दिया जो यिर्मयाह के संदेशों के खिलाफ था। शमायाह भी एक झूठा भविष्यवक्ता था। वह बाबुल में निर्वासन में रहता था। उसने बाबुल में यहूदियों को ऐसे संदेश दिए जो यिर्मयाह के संदेशों के खिलाफ थे।

ये उदाहरण दक्षिणी राज्य के लोगों और अगुवों के बारे में कुछ दिखाते हैं। उन्होंने यिर्मयाह और उसके संदेशों का कड़ा विरोध किया। उन्होंने यह बाबुल के राजा द्वारा दक्षिणी राज्य पर नियंत्रण करने के पहले व बाद में किया। यिर्मयाह का पत्र बाबुल में रहने वाले दक्षिणी राज्य के लोगों के लिए था। यह उन यहूदियों का समूह था जिन्हें सबसे पहले नबूकदनेस्सर ने यहूदा छोड़ने के लिए मजबूर किया था।

यिर्मयाह ने समझाया कि परमेश्वर किस प्रकार चाहते थे कि यहूदी निर्वासन के दौरान जीवन जीएं। परमेश्वर चाहते थे कि वे लोग यह स्वीकार करें कि निर्वासन वह न्याय था जिसे उन्होंने लाने का वादा किया था। वे चाहते थे कि वे यह स्वीकार करें कि यह कितने समय तक चलेगा। वे इन बातों को स्वीकार करने का प्रमाण इस प्रकार देंगे कि वे बाबुल को अपना घर बनाएंगे। वे इसे अपना घर इस प्रकार बनाएंगे कि उसमें घर बनाएंगे, परिवार बसाएंगे और बगीचे लगाएंगे। वे इसे अपना घर इस प्रकार बनाएंगे कि वहां मेहनत करेंगे और नगर के लिए प्रार्थना करेंगे। परमेश्वर ने उनके लिए बाबुल में सफलता की योजना बनाई थी। उन्हें डरने की आवश्यकता नहीं थी कि परमेश्वर वहां उनके लिए हानि लाएंगे। परमेश्वर चाहता था कि वे निर्वासन के समय में आशा रखें।

उनके लोग उन्हें तब पाएंगे जब वे पूरे दिल से उनकी खोज करेंगे। यह सत्य था, भले ही वे यरूशलेम और मंदिर से दूर थे। सुलैमान ने इसके बारे में प्रार्थना की थी जब मंदिर को परमेश्वर के लिए अलग किया गया था (1 राजाओं 8:46–51)। परमेश्वर यह भी चाहते थे कि उनके लोगों को आशा हो कि निर्वासन का अंत होगा। वह चाहता था कि वे विश्वास करें कि वह उन्हें यहूदा वापस लाएगा। परमेश्वर ऐसा 70 वर्षों के बाद करेंगे।

हालांकि बाबुल में यहूदी इन बातों को स्वीकार नहीं करना चाहते थे। वे यह दिखावा करना चाहते थे कि वे बहुत जल्द यहूदा वापस आ जाएंगे। वे यह दिखावा करना चाहते थे कि यहूदा में जीवन बाबुल के जीवन से बेहतर होगा। यह दिखावा यह प्रकट करने का एक तरीका था कि परमेश्वर अपने लोगों के खिलाफ कोई न्याय नहीं ला रहा था। यह दिखावा यह प्रकट करने का एक तरीका था कि उन्होंने परमेश्वर के खिलाफ पाप नहीं किया था। इसका मतलब यह था कि बाबुल में यहूदियों ने उसकी बात नहीं सुनी थी।

यिर्मयाह 30:1–33:26

इन अध्यायों में आशा के संदेश परमेश्वर के लोगों को आशीष देने के बारे में हैं। यह न्याय के समय के समाप्त होने के बाद होगा। याकूब के वंशजों को उनकी भूमि में वापस लाया जाएगा। वे परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहेंगे और उसके लोग बनकर रहेंगे। वे केवल एकमात्र परमेश्वर की उपासना और सेवा करेंगे। इससे उन्हें वाचा की आशीष का आनंद मिलेगा।

परमेश्वर उन्हें शांति, विश्राम, सुरक्षा और संरक्षा प्रदान करेंगे। परमेश्वर उन्हें चंगा करेंगे और उन्हें स्वास्थ्य और सफलता देंगे। वह उन्हें अपने कोमल और विश्वासयोग्य प्रेम में से स्वतंत्र रूप से बांटेगा। उनका राजा दाऊद के परिवार की शाखा से होगा। यह राजा न्याय और सही कार्य करेगा। लोग परमेश्वर की उपासना उन तरीकों से करेंगे जो उसने उन्हें सिखाए थे। याजक और लेवी यह सुनिश्चित करेंगे।

परमेश्वर ने वर्णन किया कि उनके लोगों के पाप उनके हृदय की पट्टिका पर कैसे अंकित थे। उन्होंने यह न्याय के संदेश में कहा था जो यिर्मयाह 17:1 में दर्ज है। इन आशा के संदेशों में उन्होंने कहा कि उनके हृदयों पर कुछ और लिखा जाएगा। परमेश्वर ने वादा किया कि वे अपनी विधि उनके हृदयों पर लिखेंगे। इस प्रकार परमेश्वर अपने लोगों के साथ एक नयी वाचा बांधेंगे। सीनै पर्वत की वाचा की व्यवस्था पत्थर की पट्टिकाओं पर लिखी गई थी।

उनके हृदयों पर परमेश्वर की व्यवस्था लिखी होना किसी बात का वर्णन करने का एक तरीका था। इसका अर्थ था कि परमेश्वर के लोग सच में जानेंगे कि परमेश्वर कौन है। परमेश्वर को जानने से वे स्पष्ट रूप से समझने में सक्षम होंगे कि पाप और बुराई क्या हैं। फिर वे बुराई को ना और परमेश्वर को हाँ कहने का चुनाव करेंगे। वे उसकी आराधना करेंगे, सेवा करेंगे और आज्ञा का पालन करेंगे। परमेश्वर ने हमेशा से यही मनुष्यों के लिए चाहा था।

पाप और बुराई परमेश्वर के लोगों के लिए एक समस्या बनी रहेंगी, लेकिन वे इस समस्या को हल करने के लिए परमेश्वर पर भरोसा करेंगे। परमेश्वर उनके पापों और उनकी बुरी राहों को क्षमा करके इसका समाधान करेंगे। न्याय के संदेशों के विपरीत, ये आशा के संदेश यिर्मयाह के लिए सुखद थे। उसने एक भूमि का टुकड़ा एक संकेत के रूप में खरीदा। यह एक संकेत था कि परमेश्वर के लोग भविष्य में फिर से भूमि खरीदेंगे और बेचेंगे। यह एक संकेत था कि आशा के संदेशों में परमेश्वर के वादे सच होंगे।

यहूदियों ने पहचाना कि कुछ वादे निर्वासन के बाद पूरे हुए। उन्होंने समझा कि कुछ वादे भविष्य में पूरे होंगे। यह तब होगा जब मसीहा आएंगे। नए नियम के लेखकों ने दिखाया कि यीशु ने नयी वाचा को प्रभावी बनाया। यीशु ने लोगों के लिए पाप और बुराई की शक्ति से मुक्त होना संभव बनाया।

यिर्मयाह 34:1–45:5

ये अध्याय यिर्मयाह के जीवन की कहानियों का संग्रह हैं। इनमें यहोयाकीम के शासनकाल से लेकर यरूशलेम के नष्ट होने के बाद के समय की घटनाएँ शामिल हैं।

यह कहानियाँ दक्षिणी राज्य के लोगों और अगुवों के बारे में कुछ दिखाती हैं। यिर्मयाह के माध्यम से प्रभु ने जो कहा था, उन्होंने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया। यह बात तब भी सही थी और उसके बाद भी जब बाबुल की सरकार ने दक्षिणी राज्य पर नियंत्रण कर लिया था।

रेकाब के परिवार की कहानी ने विश्वासयोग्यता से आज्ञापालन करने का एक उदाहरण प्रस्तुत किया। रेकाब के परिवार ने रेकाब के पुत्र यहोनादाब के निर्देशों का विश्वासयोग्यता से पालन किया। परमेश्वर ने उनके पालन करने की क्षमता को एक उदाहरण के रूप में उपयोग किया। रेकाब के परिवार की तुलना में, यह स्पष्ट था कि परमेश्वर के लोग उनकी आज्ञापालन करने से इनकार कर रहे थे।

इसका एक और उदाहरण वह था जो राजा यहोयाकिम ने परमेश्वर के संदेश सुनने के बाद किया। बारूक एक सचिव था। उसने कई वर्षों तक यिर्मयाह द्वारा बोले गए संदेशों को चर्मपत्र पर लिखा। यहोयाकिम ने चर्मपत्र को जला दिया और यिर्मयाह और बारूक को गिरफ्तार करने की कोशिश की। बारूक ने उन्हें और भी अधिक संदेशों के साथ फिर से लिखा।

बाद में, अन्य अधिकारियों ने यिर्मयाह को गिरफ्तार कर लिया। कुछ ने उसे मारने की कोशिश की ताकि वह परमेश्वर के संदेश कहना बंद कर दे। राजा सिदकिय्याह ने यिर्मयाह से सलाह मांगी। उन्होंने यिर्मयाह से उनके लिए प्रार्थना करने को कहा। यिर्मयाह ने उन्हें बाबुल के राजा की सेवा करने और विनम्र होने के बारे में निर्देश दिए, लेकिन सिदकिय्याह और उनके अधिकारियों ने उन निर्देशों का पालन नहीं किया। न ही उन्होंने मूसा की व्यवस्था में दासों और सेवकों के बारे में दिए गए निर्देशों का पालन किया। उन्होंने अपने दासों को मुक्त करने का वादा किया था लेकिन फिर अपना मन बदल लिया।

इन बातों के कारण, परमेश्वर ने नबूकदनेस्सर को यरूशलेम को पूरी तरह नष्ट करने की अनुमति दी। बेबीलोन वासियों ने यिर्मयाह के साथ अच्छा व्यवहार किया और उन्हें स्वतंत्र कर दिया। गदल्याह एक अगुवा था जो परमेश्वर के संदेशों पर ध्यान देता था। उसने समझा कि दक्षिणी राज्य को बाबुल की सेवा करनी चाहिए। यहूदा के राज्यपाल के रूप में उसने लोगों को यही करने के लिए प्रेरित किया, लेकिन दाऊद के परिवार के एक अधिकारी ने गदल्याह की हत्या कर दी। फिर दक्षिणी राज्य में बचे हुए लोगों का एक बड़ा समूह मिस्र भाग गया। उन्होंने सोचा कि वे वहां बाबुल की सेनाओं से सुरक्षित रहेंगे।

यिर्मयाह ने उन्हें ऐसा न करने की चेतावनी दी थी, लेकिन इस समूह ने यिर्मयाह और बारूक को उनके साथ मिस्र जाने के लिए मजबूर किया। मिस्र में, यहूदियों के इस समूह ने स्वर्ग की रानी नामक एक झूठी देवी की पूजा शुरू कर दी। वे मानते थे कि यरूशलेम इसलिए नष्ट हो गया था क्योंकि कुछ समय के लिए उन्होंने उसकी पूजा करना बंद कर दी थी। इससे यह स्पष्ट हुआ कि उन्होंने यिर्मयाह की बात नहीं सुनी थी और न ही परमेश्वर के संदेशों को समझा था। परमेश्वर ने वादा किया था कि जब यरूशलेम में संकट आएगा, तब बारूक मारा नहीं जाएगा। यह ज्ञात नहीं है कि मिस्र में यिर्मयाह और बारूक के साथ क्या हुआ।

यिर्मयाह 46:1–49:39

इन अध्यायों में दक्षिणी राज्य के आसपास की जातियों के बारे में न्याय के संदेश हैं। अध्याय 25 में, यिर्मयाह ने घोषणा की थी कि परमेश्वर उनके खिलाफ न्याय लाएंगे। यह संदेश उस न्याय को स्पष्ट करता है।

संदेशों का मुख्य बिंदु यह है कि ये जातियाँ बाबुल द्वारा नष्ट कर दी जाएंगी। परमेश्वर मिस्र, पलिश्ती, मोआब, अम्मोन और एदोम के खिलाफ अपना न्याय लाएंगे। वे दमिश्क, केदार, हाजोर और एलाम के खिलाफ भी इसे लाएंगे।

परमेश्वर ने उनका घमंड करने, दूसरों के साथ बुरा व्यवहार करने और झूठे देवताओं पर विश्वास करने के लिए न्याय किया। परमेश्वर इन राष्ट्रों की गहराई से चिंता करते थे और उनके साथ जो हुआ, उसके बारे में चिंतित थे। उन्हें दमिश्क के प्रति आनंद आता था। उन्होंने मोआब के लिए आंसू बहाए। उन्होंने एलाम में अपना सिंहासन स्थापित करने का वादा किया। परमेश्वर चाहता था कि ये राष्ट्र जानें कि वही राजा है जो सब पर शासन करता है।

यिर्मयाह ने इन राष्ट्रों के लिए आशा का संदेश भी साझा किया। परमेश्वर ने वादा किया कि उनके लोग भविष्य में फिर से सफल होंगे। न्याय के समय के बाद, परमेश्वर उन्हें फिर से आशीष देंगे।

यिर्मयाह 50:1–51:64

अध्याय 25 में, यिर्मयाह ने घोषणा की थी कि परमेश्वर बाबेलवासियों का न्याय करेंगे। बाबेल के खिलाफ न्याय के पूरे संदेश अध्याय 50 और 51 में दर्ज हैं। यिर्मयाह ने इन संदेशों

को एक चर्मपत्र पर लिख लिया। बारूक के भाई को बाबेल में उसको जोर से पढ़ना था। फिर उसे उस चर्मपत्र को फरात नदी में डुबा देना था। यह एक भविष्यवाणी का कार्य था। यह एक संकेत था कि परमेश्वर उन संदेशों में कही गई बातों को पूरा करेंगे।

यिर्मयाह ने यह न्याय संदेश उस समय घोषित किया जब नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम को नष्ट नहीं किया था। बाबेल की सेनाएँ अन्य राष्ट्रों के खिलाफ न्याय लाने के लिए परमेश्वर का उपकरण थीं, लेकिन बाबेल के लोग और अगुवे यह नहीं समझ सके कि उनकी सफलता का असली कारण क्या था। परमेश्वर की सामर्थ ने उन्हें सफलता दी। इसके बजाय, बाबेलवासियों ने अपने झूठे देवताओं का सम्मान किया। उन्होंने अन्यजातियों के साथ बुरा व्यवहार करके खुद को धनी बना लिया। उन्होंने अपनी दीवारों को मोटा और ऊँचा बनाने के लिए कड़ी मेहनत की। इससे यह दिखता है कि वे अपनी सरकार और सेना पर भरोसा करते थे कि वे उन्हें सुरक्षित रखती थी।

परमेश्वर ने बाबेल के स्वर्ग तक पहुँचने की बात कही। यह उनके अभिमान को व्यक्त करने का एक तरीका था। यह उस मीनार की तरह था जो बाबेल नामक शहर में बनाई गई थी (उत्पत्ति 11:1–9)। उस मीनार को बनाने वाले लोग चाहते थे कि वह मीनार स्वर्ग तक पहुँचे। परमेश्वर ने यह स्पष्ट कर दिया कि स्वर्ग तक पहुँचने से बाबेल सुरक्षित नहीं रहेगा।

तीन बार परमेश्वर ने अपने लोगों से बाबेल से भागने का आग्रह किया। वे नहीं चाहते थे कि वे बाबेल के साथ नष्ट हो जाएं। बाबेल के साथ वही होगा जो उसने दूसरों के साथ किया था। यह मूसा की व्यवस्था में वर्णित लैव्यव्यवस्था 24:19 के एक नियम से मेल खाता था। जब बाबेल को दंडित किया जाएगा, तो स्वर्ग और पृथ्वी में सब कुछ आनंदित होगा। इसका कारण यह था कि बाबेल ने बहुत से लोगों और स्थानों को कष्ट दिया था। वे प्रसन्न होंगे जब बाबेल और हानि नहीं पहुंचा सकेगा।

जब फ़ारस ने बाबेल पर नियंत्रण किया, तब परमेश्वर के बाबेल को दंड देने के कुछ वादे पूरे हुए। नए नियम के लेखकों ने समझा कि कुछ वादे भविष्य में पूरे होंगे। प्रकाशितवाक्य के अध्याय 18 में, यूहन्ना ने बाबेल के खिलाफ इन न्याय के संदेशों के बारे में बात की। यूहन्ना ने बाबेल का उपयोग अन्य अभिमानी सरकारों के बारे में बात करने के लिए किया। बाबेल इस बात का उदाहरण था कि परमेश्वर उन सरकारों को कैसे दंड देंगे जो परमेश्वर के लोगों के साथ बुरा व्यवहार करती हैं।

यिर्मयाह 52:1–34

यिर्मयाह ने बाबेल की सेनाओं द्वारा यरूशलेम के विनाश के बारे में न्याय के संदेश बोले थे। उन्होंने ये संदेश कई वर्षों तक बार-बार बोले थे।

यिर्मयाह *52:1–34*

दक्षिणी राज्य के लोग और अगुवे उन पर विश्वास करने से इनकार कर चुके थे। बाबेल के यरूशलेम पर नियंत्रण करने की कहानी यिर्मयाह अध्याय 39 में बताई गई थी। यह कहानी 2 राजाओं अध्याय 24 और 2 इतिहास अध्याय 36 में भी दर्ज की गई थी।

यिर्मयाह की पुस्तक के अंतिम अध्याय के रूप में कहानी फिर से सुनाई गई। इससे यह बहुत स्पष्ट हो गया कि यिर्मयाह ने सत्य बोला था। उसने परमेश्वर के संदेश बोले थे। परमेश्वर के संदेशों पर विश्वास किया जा सकता था।